

रॉबर्ट वानॉय , प्रमुख भविष्यवक्ता, व्याख्यान 1

यशायाह का व्यक्तित्व, संदर्भ, यशायाह की संरचना

I. यशायाह

A. यशायाह स्वयं पैगंबर और उनके परिवार पर कुछ टिप्पणियाँ हम यशायाह से शुरू करते हैं। और रूपरेखा का ए है: "यशायाह भविष्यवक्ता पर कुछ टिप्पणियाँ।" "यशायाह" नाम का अर्थ है "मोक्ष YHWH का है।" यह नाम 'यशा' धातु से आया है। और YHWH . "मोक्ष YHWH का है" या "YHWH मोक्ष है," उसके नाम का अर्थ है। यह यशायाह की पुस्तक के अलावा पुराने नियम में कई स्थानों पर एक व्यक्ति के नाम के रूप में पाया जाता है जो स्पष्ट रूप से यशायाह के समान नहीं है जिसने यशायाह की पुस्तक लिखी है। उदाहरण के लिए, 1 इतिहास 3:21 आप वहां पढ़ते हैं, "वह हनन्याह के वंशज हैं: पलत्याह और यशायाह।" वह यशायाह यशायाह जैसा ही नाम है; इसे बस अलग ढंग से लिप्यंतरित किया गया है। 1 इतिहास 25:3 में आपने नामों की एक सूची पढ़ी - यह फिर से यशायाह है - दूसरे के समान ही, लेकिन हिब्रू में यह यशायाह के समान है। श्लोक 15 में हम पढ़ते हैं, "आठवें यशायाह, उसके पुत्रों और सम्बन्धियों को।"

तो यह अन्यत्र घटित होता है; इस प्रकार जब आप यशायाह 1:1 को देखते हैं; उसकी पहचान अमोज़ के बेटे के रूप में की गई है। मुझे लगता है कि जब हमने भविष्यवक्ता को अमोस पर देखा तो मैंने इस पर चर्चा की। परन्तु ईसा 1:1 में है, "देख, यहूदा और यरूशलेम के विषय में यशायाह पुत्र अमोस का दर्शन।" यशायाह भविष्यवक्ता अमोज़ का पुत्र है, जिसे हिब्रू में *साडे* और *एलेफ़ के साथ लिखा जाता है*, जबकि अमोस एक 'अयिन और एक समेक' है; तो यह अंतर है। यह अंग्रेजी का "अमोज़" है, "अमोस" नहीं। अंग्रेजी में हम ज्यादा भेद नहीं करते।

हम उनके पिता अमोज़ के बारे में कुछ नहीं जानते। एक रब्बी परंपरा है जिसे सत्यापित नहीं किया जा सकता है, कि अमोज़ यहूदा के राजा अमज़ियाह का भाई था। यदि ऐसा है, तो यशायाह राजा का भतीजा होता। लेकिन उस यहूदी परंपरा के अलावा इसका कोई वास्तविक, ठोस सबूत नहीं है।

ऐसा लगता है कि यशायाह यरूशलेम में या उसके आस-पास रहता था क्योंकि उसके द्वारा

दी गई विभिन्न भविष्यवाणियों के लिए अधिकांश सेटिंग यरूशलेम के निकट है, खासकर यदि आप अध्याय सात को देखते हैं। आपने अध्याय 7 पद 3 में पढ़ा, "यहोवा ने यशायाह से कहा, 'तुम और तुम्हारा पुत्र शीयर- याशूब , धोबी के खेत की सड़क पर, ऊपरी तालाब के जलसेतु के अंत में आहाज से मिलने के लिए बाहर जाओ।' "यह एक जल प्रणाली के स्थान के पास है जो यरूशलेम के लिए पानी की आपूर्ति करती थी। बाद में, हिजकिय्याह के समय में, जब अश्शूरियों ने यरूशलेम पर हमला किया और उसे घेर लिया, तो हिजकिय्याह ने यशायाह को बुलाया और पुस्तक के अधिकांश भाग में वह यरूशलेम में या उसके निकट प्रतीत होता है।

हम जानते हैं कि वह शादीशुदा था और उसके कम से कम दो बेटे थे जिन्हें प्रतीकात्मक नाम दिए गए थे। जिसका उल्लेख हमने अभी यशायाह 7:3 में किया है। "यहोवा ने यशायाह से कहा, 'तुम और तुम्हारा पुत्र, शीयर- याशूब , बाहर चले जाओ।' " शीयर- याशूब का अर्थ है "बचे हुए लोग लौट आएंगे"; *कतरनी* का अर्थ है "अवशेष" और *जशुब*, *शूब से आ रहा है*, "वापस लौटना।" तो इसका मतलब है "बचे हुए लोग वापस आएँगे।" और, निःसंदेह, यह एक संदेश देता है कि सबसे पहले आपको भूमि से बाहर कर दिया जाएगा। निर्वासन आने वाला है लेकिन एक अवशेष वापस आ जाएगा। तो निर्णय आ रहा है, लेकिन निर्णय से परे आशा है। एक अवशेष वापस आ जाएगा.

दूसरे पुत्र का नाम अध्याय 8 में आता है। आप श्लोक एक में पढ़ते हैं, "प्रभु ने कहा, 'एक बड़ी पुस्तक लो, उस पर एक साधारण कलम से लिखो: माहेर-शालाल-हाश-बाज़। और मैं ऊरिय्याह याजक और जेबेरेक्याह के पुत्र जकर्याह को अपने लिये विश्वसनीय गवाह ठहराऊंगा। तब मैं भविष्यवक्ता के पास गया; वह गर्भवती हुई और उसने एक पुत्र को जन्म दिया। और यहोवा ने मुझ से कहा, 'उसका नाम महेर-शालाल-हाश-बाज़ रखना।' " यदि आप में से कोई अपने बेटे के लिए नाम ढूंढ़ रहा है तो यह एक अच्छा नाम है। महेर-शालाल-हाश-बाज़ का अर्थ है "लूट में तेजी लाना, लूट में तेजी लाना।" "लूट जल्दी करो, लूट जल्दी करो।" मैंने देखा कि यहां एनआईवी नोट में कहा गया है कि इसका मतलब है *जल्दी लूटना, तेजी से लूटना*। किसी भी तरह, नाम एक संदेश देता है। यदि आप अध्याय दस, छंद पाँच और छह पर जाते हैं, तो आपको वास्तव में माहेर-शालाल-हाश-बाज़ के नाम पर एक नाटक मिलता है, क्योंकि पाँच और छह में यशायाह कहते हैं, "अश्शूर पर धिक्कार है,

मेरे क्रोध की छड़ी, मेरे क्रोध की लाठी किसके हाथ में है! मैं उसे एक ईश्वरविहीन राष्ट्र के विरुद्ध भेजता हूँ।”

अर्थात्, यहोवा न्याय और दण्ड देने के लिये अशूर को इस्राएल के विरुद्ध अपने हाथ में छड़ी के रूप में प्रयोग कर रहा है। श्लोक 6 के उत्तरार्ध में हम पढ़ते हैं, "मैं उसे उन लोगों के विरुद्ध भेजता हूँ जो मुझ पर क्रोध करते हैं" - फिर अगले वाक्यांश पर ध्यान दें - "लूट को जब्त करने और लूट को छीनने के लिए।" वे माहेर-शलाल-हश-बाज़ के समान शब्द हैं: "लूट को जब्त करना और लूट को छीनना। "अशूरी लोग आकर इस्राएल को लूटेंगे, और उन्हें सड़कों पर कीचड़ की नाई रौंद डालेंगे। परन्तु अशूरियों का इरादा यह नहीं है; दूसरे शब्दों में, असीरियन अपने हितों की तलाश कर रहा है, लेकिन असीरिया के अपने हितों के पीछे, भगवान असीरिया को न्याय के साधन के रूप में उपयोग कर रहा है। तो माहेर-शलाल-हाश-बाज़ नाम वास्तव में उस फैसले की आशंका है जो अशूरियों के हाथों आ रहा है।

यशायाह के जीवन के दौरान कालक्रम और राजा अब, यशायाह ने भविष्यवाणी की, जैसा कि आप पहली कविता से जानते हैं, यहूदा के विभिन्न राजाओं के शासनकाल के दौरान: "यहूदा और यरूशलेम के विषय में वह दर्शन जो आमोज़ के पुत्र यशायाह ने उज्जियाह, योताम, आहाज के शासनकाल के दौरान देखा था और हिजकिय्याह।" यशायाह ने दक्षिणी साम्राज्य, यहूदा के उज्जियाह, योताम, आहाज और हिजकिय्याह के समय में भविष्यवाणी की थी। ये शासन कुछ हद तक जटिल हैं क्योंकि इनमें सह-शासनों की एक श्रृंखला प्रतीत होती है।

यदि आप उस कालानुक्रमिक समय के विवरण में जाना चाहते हैं, तो आप हिजकिय्याह के शासनकाल के अंत तक 767 ईसा पूर्व से लेकर 695 ईसा पूर्व तक चल रहे हैं। यह समय की काफी लंबी अवधि है; हालाँकि, फिर से एक यहूदी परंपरा, एक रब्बी परंपरा है, कि यशायाह को हिजकिय्याह के बाद, मनश्शे के समय में, निम्नलिखित राजा के समय में मार दिया गया था।

मनश्शे के तहत यशायाह की मृत्यु की परंपरा यहूदी परंपरा है: मनश्शे एक बहुत ही दुष्ट राजा था, यशायाह मनश्शे के कुछ लोगों से बचकर भाग गया और वह एक खोखले पेड़ में छिप

गया, जिसे उसके लोग काटने के लिए आगे बढ़े, और ऐसा करते हुए उन्होंने यशायाह को काट दिया दो में। कुछ लोग इब्रानियों 11:37 में इसका संकेत देखते हैं जहां यह विश्वास के इन नायकों की बात करता है और यह "काटे जाने" की बात करता है। इब्रानियों 11:37 कहता है, “ उन पर पथराव किया गया; उन्हें दो भागों में काटा गया; उन्हें तलवार से मार डाला गया। वे भेड़-बकरियों की खालें ओढ़े हुए चले गए। ”

अब, उस परंपरा के बारे में दिलचस्प बात यह है कि यह अभी भी मनश्शे के समय में यशायाह को देखता है, भले ही उस शिलालेख में उज्जियाह, जोथम, आहाज और हिजकिय्याह का उल्लेख हो। ऐसा लगता है कि यह निष्कर्ष निकालने का अभी भी आधार है कि यशायाह हिजकिय्याह के शासनकाल के अंत तक जीवित रहा और मनश्शे के समय में भी जीवित रहा। मेरे ऐसा कहने का कारण यह है कि अध्याय 37, श्लोक 38 में, आपने पढ़ा, " एक दिन, जब वह अपने देवता निस्रोक के मंदिर में पूजा कर रहा था (यह अश्शूर के राजा सन्हेरीब के बारे में बात कर रहा है), उसके बेटों अद्रम्मेलोक और शारेज़ेर ने उसे काट दिया तलवार से मारा गया, और वे अरारत देश में भाग गये। और उसका पुत्र एशहद्दोन उसके स्थान पर राजा हुआ। एसरहद्दोन का उत्तराधिकार सन्हेरीब की मृत्यु के बाद आया , और हम असीरियन अभिलेखों से जानते हैं कि सन्हेरीब की मृत्यु 681 ईसा पूर्व में हुई थी, और यह एक बहुत ही निश्चित तारीख है। तो आप इससे देख सकते हैं कि यह मनश्शे के समय में है। फिर, चाहे हमारे पास सह-शासन हो या एकमात्र शासन हो, वह बिल्कुल स्पष्ट रूप से मनश्शे के समय में है।

अब, कई लोगों को लगता है कि शायद 1:1 के शीर्षक में मनश्शे का उल्लेख न होने का कारण यह है कि हिजकिय्याह की मृत्यु के बाद, जो एक धर्मात्मा राजा था, और मनश्शे के साथ शासन की शुरुआत हुई, जो एक बहुत दुष्ट राजा था, यशायाह का सार्वजनिक मंत्रालय बंद हो गया। वास्तव में, कई लोग महसूस करते हैं कि शायद, यह निश्चित रूप से अटकलें हैं, कई लोग महसूस करते हैं कि शायद पुस्तक का दूसरा भाग अध्याय 40 से 66, जो निर्वासन से मुक्ति के बारे में बात करना शुरू करता है, तब लिखा गया था।

मनश्शे के आगमन के साथ, निर्वासन के फैसले की निश्चितता स्पष्ट थी। वास्तव में, राजाओं की पुस्तक हमें बताती है कि मनश्शे के समय के बाद भी, जब योशियाह के समय में आपका सुधार हुआ, तब तक बहुत कम, बहुत देर हो चुकी थी। मनश्शे की दुष्टता के कारण, न्याय अपरिहार्य था। इसे टाला नहीं जा सका।

बहुत से लोग महसूस करते हैं कि हिजकियाह की मृत्यु के बाद यशायाह ने जो किया वह सार्वजनिक मंत्रालय से हट गया था और शायद ईश्वरीय तत्व, या "शेष" के लिए एक अधिक निजी प्रकार का मंत्रालय था। फिर उसने निर्वासन से मुक्ति के बारे में अपनी भविष्यवाणियाँ कीं जो निश्चित थीं, और ये भविष्यवाणियाँ एक सांत्वना थीं और उन धर्मी लोगों के लिए आशा का आधार प्रदान करती थीं जो देश में रह गए थे। लेकिन यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि यशायाह मनश्शे के शासनकाल में जीवित रहा, भले ही पुस्तक के शीर्षक में मनश्शे का उल्लेख नहीं है।

बी. पुस्तक के लिए ऐतिहासिक सेटिंग

1. रूपरेखा का इज़राइल संदर्भ बी. "पुस्तक के लिए ऐतिहासिक सेटिंग" है। अध्याय छह में, यशायाह के उस प्रसिद्ध दर्शन के साथ, आपके पास एक तारीख है। आपने पढ़ा, "जिस वर्ष राजा उज्जियाह की मृत्यु हुई, मैंने प्रभु को ऊंचे और ऊंचे सिंहासन पर बैठे हुए देखा।" जिस वर्ष राजा उज्जियाह की मृत्यु हुई वह 739 ईसा पूर्व था। यह इस अर्थ में एक महत्वपूर्ण तारीख है, कि उज्जियाह की मृत्यु ने वास्तव में यहूदा के लिए समृद्धि और राजनीतिक ताकत की अवधि के अंत को चिह्नित किया। याद रखें कि दक्षिण में यहूदा पर उज्जियाह के समय में, उत्तर में इज़राइल काफी समृद्ध था - यह यारोबाम द्वितीय के समय के समान था। जेरोबाम द्वितीय लगभग 752 ईसा पूर्व रहा होगा, जेरोबाम द्वितीय के साथ उत्तरी साम्राज्य, इज़राइल के लिए महान समृद्धि का समय था।

परन्तु वह अवधि समाप्त हो रही थी; अशूर ने सचमुच इस्राएल को धमकी दी थी। हमने योना की पुस्तक की पृष्ठभूमि के साथ इस अंतिम तिमाही पर चर्चा की। अशूर ने लगभग एक सदी पहले अहाब के समय में और उसके बाद येहू के समय में इज़राइल को धमकी दी थी, जिसने अहाब के राजवंश को नष्ट कर दिया था। याद रखें, येहू 840 ईसा पूर्व था, लगभग एक सदी पहले। येहू ने अशूर के शल्मनेसर को श्रद्धांजलि अर्पित की। शल्मनेसर III के शासनकाल के दौरान, एक काला ओबिलिस्क है जिसमें शल्मनेसर को श्रद्धांजलि देते हुए येहू की तस्वीर है।

उस समय असीरिया ने यहूदा को धमकी दी थी, लेकिन तब असीरिया पतन की ओर चला गया था। अशूर को उत्तर से उरारतु लोगों द्वारा दबाया गया था। कुछ समय के लिए, सीरिया ने इज़राइल को परेशानी दी - असीरिया नहीं, बल्कि सीरिया, जिसे "अराम" कहा जाता था। सीरिया की राजधानी दमिश्क ने इज़राइल को धमकी दी थी। लेकिन सीरिया, या अराम भी कमजोर हो गया था, इसलिए जब आप उज्जियाह और यारोबाम द्वितीय के समय में आते हैं, तो इज़राइल के लिए शक्ति और समृद्धि का समय था क्योंकि सीरिया और असीरिया दोनों कमजोर थे।

2. असीरियन संदर्भ लेकिन वह सब खत्म हो रहा था। असीरिया को अब फिर से सत्ता में आना था और अन्य लोगों पर अपना प्रभाव और नियंत्रण बढ़ाने का प्रयास करना था। और इसकी शुरुआत

टिग्लैथ-पिलेसर III (745 - 727 ईसा पूर्व) से हुई। टिग्लैथ-पाइल्सर III की शुरुआत नव-असीरियन साम्राज्य के रूप में हुई। आपके पास असीरिया में शासकों का यह उत्तराधिकार है: टिग्लैथ-पिलेसर III, शल्मनेसर V, सरगोन II, और फिर सन्हेरीब जो बाद में यहूदा और हिजकिय्याह पर हमला करेगा।

असीरियन अभिलेखों से हमें पता चलता है कि टिग्लैथ-पिलेसर ने उत्तरी सीरिया में राजाओं की एक लीग के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी, जिनमें से एक था " यिउडा का अज़ियाह ।" अधिकांश लोग सोचते हैं कि वह उज्जियाह है। अब उज्जियाह के दो नाम थे, कभी-कभी उसे अजर्याह (या तो अजर्याह या उज्जियाह) कहा जाता था। बहुत से लोग सोचते हैं कि अज़ियाह उज्जियाह था। यह बिल्कुल निश्चित नहीं है, लेकिन कई लोग सोचते हैं कि यह यहूदा का राजा अजर्याह या उज्जियाह था।

टिग्लैथ-पिलेसर का कहना है कि जिन राजाओं के विरुद्ध उसने युद्ध किया था, उन्हें कर देने के लिए बाध्य किया गया था। 743 ईसा पूर्व के असीरियन रिकॉर्ड से, पुराने नियम में इसके बारे में कुछ भी नहीं कहा गया है। लेकिन 743 में, उसने राजाओं के एक गठबंधन से श्रद्धांजलि ली, जिनमें शायद उज्जियाह भी था। वह टिग्लैथ-पिलेसर के शासन का तीसरा वर्ष है। देखिए, यह टिग्लैथ-पिलेसर के शासनकाल की शुरुआत है। अपने एक अन्य इतिहास में वह सामरिया के मेनाहेम से कर लेने की बात करता है। आप देखिए, यदि आप उत्तरी राज्य में जाते हैं, तो वही समय होता है।

और यदि आप 2 राजा 15:19 को देखें, तो यहां आपके पास बाइबिल का एक संदर्भ है, आप वहां पढ़ते हैं, " फिर पुल " (जो टिग्लैथ-पिलेसर का बेबीलोनियाई नाम है , टिग्लैथ-पिलेसर असीरियन नाम है; बेबीलोनवासी उसे बुलाते हैं) पुल और उसे यहाँ राजाओं में पुल कहा गया है)। "तब अशूर के राजा पूल ने देश पर आक्रमण किया, और मनहेम ने उसका समर्थन प्राप्त करने और राज्य पर अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए उसे एक हजार किक्कार चाँदी दी।"

मनहेम ने यह धन इस्राएल से वसूल किया। इसका वर्ष सटीक रूप से ज्ञात नहीं है, लेकिन अलब्राइट इसे 738 ईसा पूर्व बताते हैं, थोड़े इसे 743 बताते हैं। किसी भी मामले में, आप देख सकते

हैं कि टिग्लैथ-पिलेसर के तहत अशूरियों की ओर से इज़राइल पर फिर से दबाव डाला जाने लगा है। तिग्लैथ-पिलेसर कहते हैं, “मनहेम के लिए, मैंने उसे अभिभूत कर दिया और वह पक्षी की तरह उड़ गया। अकेले ही मैंने उसे उसके स्थान पर लौटा दिया। सोना, चाँदी, सनी के वस्त्र और बहुरंगी सजावटें मुझे उनसे मिलीं।” यदि आप अपनी ग्रंथ सूची (रोमन अंक आईडी के अंतर्गत) में देखें, तो मेरे पास वह पाठ एनआईटी (जेम्स सी. प्रिचर्ड द्वारा लिखित *एन्सिएंट नियर ईस्टर्न टेक्स्ट्स*) से है। यह प्राचीन निकट पूर्व के अतिरिक्त बाइबिल ग्रंथों का मानक संग्रह है। यदि आप इस समय के कुछ असीरियन इतिहास को देखना चाहते हैं तो यह पृष्ठ 25 से 29 पर है। वह बिंदु उज्जियाह के समय का है, यशायाह के मंत्रालय की शुरुआत में, असीरिया ने सत्ता हासिल करना शुरू कर दिया और इज़राइल के उत्तरी और दक्षिणी दोनों राज्यों पर दबाव डालना शुरू कर दिया।

3. सिर्रो-एफ़्रैमाइट युद्ध (734 ईसा पूर्व)

जहां तक ऐतिहासिक संदर्भ का सवाल है, अगली महत्वपूर्ण बात 734 ईसा पूर्व, सिर्रो-एफ़्रैमिक युद्ध है। सिर्रो-एफ़्रैमिक युद्ध तब होता है जब सीरिया, या अराम, और एफ़्रैम, उत्तरी राज्य, यहूदा पर हमला करते हैं, और यह यशायाह 7 से 11 की भविष्यवाणियों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। इज़राइल और सीरिया एक कठपुतली राजा को स्थापित करने के उद्देश्य से यहूदा पर हमला करते हैं यहूदा में सिंहासन और आहाज से छुटकारा। यदि आप यशायाह 7 की ओर मुड़ते हैं, तो आप श्लोक 5 में पढ़ते हैं, "अराम" - मुझे उस पर एक टिप्पणी करने दें। जब आप एनआईवी पढ़ेंगे तो आप "अराम" पढ़ेंगे। जब आप किंग जेम्स पढ़ेंगे तो आप "सीरिया" पढ़ेंगे। वे वही हैं। मुझे लगता है कि अराम वास्तव में बेहतर है, क्योंकि यह हिब्रू में इसी तरह दिखता है। हिब्रू में इसे "अराम" कहा जाता है। सीरिया शब्द असीरिया का संक्षिप्त रूप है। "सीरिया" शीर्षक वास्तव में ग्रीक शब्दावली से आया है जब सिकंदर और उसकी सेनाएँ पूर्व में आई थीं। वे असीरियन भूमि के पश्चिमी भाग, दमिश्क के आसपास के क्षेत्र में आये। यूनानियों ने इसे "सीरिया" कहा, जो असीरिया का संक्षिप्त रूप है। वह शब्दावली परंपरा के माध्यम से अंग्रेजी संस्करण में आई। लेकिन मुझे लगता है कि बहुत से लोग सीरिया और असीरिया को भ्रमित करते हैं, जो करना बहुत आसान है, इसलिए

दमिश्क के आसपास के क्षेत्र को "अराम" और सुदूर पूर्व में टाइग्रिस के क्षेत्र के रूप में बोलना संभवतः बेहतर और निश्चित रूप से हिब्रू शब्दावली के करीब है। -फरात क्षेत्र, असीरिया के रूप में जो टाइग्रिस-फरात क्षेत्र के उत्तरी भाग में था।

परन्तु यशायाह 7:5 कहता है, "अराम, एप्रैम और रमल्याह के पुत्र ने यह कहकर तुम्हारे नाश की युक्ति की है, कि आओ हम यहूदा पर चढ़ाई करें; हम उसे तोड़ डालें, और आपस में बांट लें, और ताबील के पुत्र को उस पर राजा बना दें।" फिर भी प्रभु यहोवा यही कहता है, 'ऐसा नहीं होगा।' आहाज के स्थान पर यहूदा के सिंहासन पर राजा। आहाज इस बारे में बहुत चिंतित है। मदद मांगने के लिए आहाज ने जो किया वह यह था कि उसने अश्शूरियों के साथ गठबंधन किया, और यशायाह ने इसके लिए उसकी निंदा की।

यह अध्याय 7 का संदर्भ है। यशायाह का कहना है कि असीरिया पर निर्भरता अंततः परेशानी और दुःख लाने वाली है, और अंततः असीरिया, जिसकी ओर आहाज ने रुख किया था, उत्तरी साम्राज्य को निर्वासन में ले जाएगा और दक्षिणी साम्राज्य, यहूदा पर भी दबाव डालेगा। इसका एहसास इसके कुछ ही समय बाद हुआ। जब आप 734 ईसा पूर्व के आसपास देखते हैं तो सिरो-एफ्रैमिक युद्ध होता है और 721 ईसा पूर्व तक सामरिया असीरिया से पूरी तरह से हार गया था। और अब ज्यादा समय नहीं हुआ है जब सन्हेरीब यरूशलेम पर कब्जा कर रहा है (701 ईसा पूर्व), और अगर यह भगवान के हस्तक्षेप के लिए नहीं होता, तो यहूदा भी चला गया होता। इसलिए अश्शूर के साथ गठबंधन निश्चित रूप से एक विनाशकारी बात थी।

734 ईसा पूर्व के बाद अगली महत्वपूर्ण घटना, सिरो-एफ्रैमिक युद्ध, जहाँ तक पैगंबर यशायाह के संदेशों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है, 732 है, दो साल बाद जब दमिश्क पर अश्शूर ने कब्जा कर लिया था। 732 में टिग्लैथ-पिलेसर ने दमिश्क पर कब्जा कर लिया, लेकिन उसने उत्तरी साम्राज्य पर तुरंत कब्जा नहीं किया। 2 राजाओं 15:29 को देखें, "इस्त्राएल के राजा पेकह के समय में, अश्शूर के राजा तिग्लत्पिलेसर ने आकर इय्योन, हाबिल बेतमाका, जानोह, केदेश और हासोर को ले लिया।" वे इज़राइल के उत्तर में स्थित क्षेत्र हैं। उसने गिलाद और गलील को, और नप्ताली के सारे देश को ले लिया, और लोगों को अश्शूर को निर्वासित कर दिया। "तब एला के पुत्र होशे ने

रमल्याह के पुत्र पेकह के विरुद्ध षडयन्त्र रचा । उसने उस पर आक्रमण किया और उसे मार डाला, और फिर उज्जिय्याह के पुत्र योताम के राज्य के बीसवें वर्ष में उसके स्थान पर राजा हुआ” (2 राजा 15:30)।

तो क्रांति और साजिश के अधिकार के आधार पर आपके पास उत्तराधिकार है जहां होशे पेका के खिलाफ साजिश रचता है और सामरिया में सिंहासन लेता है। अब, दिलचस्प बात एएनईटी में है, जब आप तिग्लथ-पिलेसर के इतिहास को देखते हैं तो वह कहता है कि उसने होशे को इज़राइल में सिंहासन पर बिठाया था। अब आप देखिए, इससे आपको 2 राजा 15:30 में श्लोक 30 में जो कुछ चल रहा है उसकी पूरी तस्वीर मिलती है, " एला के पुत्र होशे ने पेकह के विरुद्ध षडयंत्र रचा ।" लेकिन उसने ऐसा असीरियन समर्थन से किया होगा, इसलिए होशे सिंहासन पर असीरिया की कठपुतली था।

तिग्लथ-पिलेसर ने अपने इतिहास में दावा किया है कि वह वही है जिसने होशे को इज़राइल के सिंहासन पर बिठाया था। लेकिन आप देख रहे हैं कि अशशूर आगे बढ़ना शुरू कर रहा है। उन्होंने दमिश्क पर कब्ज़ा कर लिया और वे पश्चिम की ओर बढ़ रहे हैं, उत्तरी साम्राज्य पर दबाव डाल रहे हैं, कुछ कस्बों पर कब्ज़ा कर रहे हैं और यहां तक कि वहां के शासन को भी बाधित कर रहे हैं और उत्तरी साम्राज्य में अपने आदमी को सिंहासन पर बिठा रहे हैं।

4. सामरिया पर कब्ज़ा (722/721 ईसा पूर्व) अगली महत्वपूर्ण घटना - यह दस साल बाद होगी - अशशूर द्वारा सामरिया पर कब्ज़ा है। यह उत्तरी साम्राज्य का पतन है। जाहिरा तौर पर होशे को तिग्लथ-पिलेसर द्वारा सिंहासन पर बिठाया गया था, लेकिन कुछ समय बाद उसने विद्रोह कर दिया और इसके कारण शल्मनेसर, जो तिग्लथ-पिलेसर का उत्तराधिकारी था - और उसके बाद उसके उत्तराधिकारी, सरगोन - को तीन साल के लिए सामरिया को घेरना पड़ा। आपने इसके बारे में 2 राजा 17 में पढ़ा, श्लोक 3 से शुरू करते हुए, “अशशूर का राजा शल्मनेसर, होशे पर हमला करने के लिए आया था जो शल्मनेसर का जागीरदार था और उसे कर देता था। परन्तु अशशूर के राजा को पता चला कि होशे गद्दार था, क्योंकि उसने मिस्र के राजा सो के पास दूत भेजे थे, और उसने अब

अश्शूर के राजा को कर नहीं दिया, जैसा कि वह वर्ष-दर-वर्ष देता था। इसलिये शल्मनेसेर ने उसे पकड़कर बन्दीगृह में डाल दिया। अश्शूर के राजा ने सारे देश पर आक्रमण किया, सामरिया पर चढ़ाई की और तीन वर्ष तक उसे घेरे रखा। होशे के नौवें वर्ष में, अश्शूर के राजा ने सामरिया पर कब्ज़ा कर लिया और इस्राएलियों को अश्शूर में निर्वासित कर दिया। उसने उन्हें हलाह में बसाया , " और आयत 7 कहती है, "यह सब इसलिए हुआ क्योंकि इस्राएलियों ने अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप किया था"; उन्होंने वाचा तोड़ दी है।

यदि आप अध्याय 18 पर जाएं, जो दक्षिणी साम्राज्य के हिजकिय्याह के शासन की चर्चा है, तो आप देखेंगे कि श्लोक 9 कहता है, "राजा हिजकिय्याह के चौथे वर्ष में, जो इस्राएल के राजा एला के पुत्र होशे का सातवां वर्ष था । " , शल्मनेसेर, अश्शूर का राजा; सामरिया पर चढ़ाई की और उसे घेर लिया। तीन वर्ष के अन्त में अश्शूरियों ने उस पर अधिकार कर लिया। इसलिए सामरिया पर हिजकिय्याह के छठे वर्ष में कब्ज़ा कर लिया गया, जो इस्राएल के राजा होशे का नौवां वर्ष था।"

5. यरूशलेम पर सन्हेरीब का हमला (701 ईसा पूर्व) और हिजकिय्याह

अगली महत्वपूर्ण घटना, 701 ईसा पूर्व, सन्हेरीब द्वारा यरूशलेम पर कब्ज़ा करने का प्रयास है। देखें, यदि आप उस अध्याय के श्लोक 13 पर जाएं, "राजा हिजकिय्याह के चौदहवें वर्ष में, अश्शूर के राजा सन्हेरीब ने यहूदा के सभी गढ़वाले शहरों पर हमला किया और उन पर कब्ज़ा कर लिया।" और 2 राजाओं 19 में, अध्याय के अंत में, आपने सन्हेरीब द्वारा यरूशलेम की घेराबंदी और शहर को बचाने के लिए भगवान के हस्तक्षेप के बारे में पढ़ा। आप 2 राजा 19:35 में पढ़ते हैं, "उसी रात यहोवा का दूत निकला और अश्शूर की छावनी में एक लाख पचासी हजार पुरुषों को मार डाला। अगली सुबह जब लोग उठे तो वहाँ सभी शव पड़े थे! इसलिये अश्शूर का राजा सन्हेरीब छावनी तोड़ कर पीछे हट गया। वह नीनवे लौट आया और वहीं रहने लगा।" तो 701 ईसा पूर्व में यरूशलेम की घेराबंदी हुई थी, लेकिन उद्धार के लिए दैवीय हस्तक्षेप था, जिसकी भविष्यवाणी की गई थी, जैसा कि हमने यशायाह द्वारा अच्छी तरह से नोट किया था।

अब जब आहाज ने अश्शूर के साथ सन्धि की, तब यशायाह ने बहुत पहले ही भविष्यवाणी

कर दी थी, कि अश्शूर देश को बाढ़ की नाईं डुबा देगा, परन्तु उसके बीच में छुटकारा भी होगा। और आप बाद में, यशायाह के जीवन में भी, हिजकिय्याह के समय में, उन भविष्यवाणियों की पूर्ति पाते हैं जो यशायाह ने असीरियन राजा के साथ गठबंधन के संदर्भ में की थीं।

अध्याय 18 का श्लोक 15, "हिजकिय्याह ने मन्दिर में मिली सारी चाँदी उसे दे दी।" खैर, यह वैसा ही लगता है जैसा आप अक्सर राजनीति और उस तरह के संबंधों में देखते हैं। बस लालच है। अश्शूरियों को जो मिल सकता है वह ले लेंगे, लेकिन यह कभी भी पर्याप्त नहीं है। श्रद्धांजलि देने के बावजूद वे और अधिक लेना चाहेंगे। अब जो इसमें शामिल हो सकता है, वह यह भी है: हिजकिय्याह ने, भले ही श्रद्धांजलि अर्पित की, बाबुल के लिए कुछ प्रस्ताव दिए, जो आम तौर पर असीरियन नियंत्रण में था, लेकिन फिर भी नियंत्रण के असीरियन क्षेत्र के भीतर एक अलग तत्व था। बेबीलोन के लिए उस प्रस्ताव की व्याख्या अश्शूर द्वारा हिजकिय्याह द्वारा किए गए विद्रोह के रूप में की गई हो सकती है जिसने उस हमले को प्रेरित किया, भले ही उसने श्रद्धांजलि अर्पित की थी।

अश्शूर के साथ हिजकिय्याह के संबंधों के वृत्तांतों को एक साथ रखने में कालक्रम की कई कठिन समस्याएं हैं। यशायाह 36-39 में इसकी एक ऐतिहासिक समानता है। यह बिल्कुल स्पष्ट प्रतीत होता है कि इन आख्यानो का क्रम कालानुक्रमिक आधार की तुलना में सामयिक, या तार्किक आधार पर अधिक व्यवस्थित किया गया था। तो मुझे लगता है कि समस्या का एक हिस्सा यह तय करना है कि उन घटनाओं का सटीक क्रम क्या है। आप यशायाह के वृत्तांत में देखते हैं कि बाबुल से दूत अंत में आता है, जो कि हम जो कह रहे हैं उसके प्रकाश में, वह सभी श्रद्धांजलि समाप्त होने के बाद था। दिखाने को बचा ही क्या होगा? लेकिन ऐसा लगता है कि वह दूत पहले रहा होगा, इसे यशायाह के इस खंड के अंत में रखा गया है ताकि पुस्तक के दूसरे भाग में विचार के प्रवाह में परिवर्तन किया जा सके जहां इज़राइल बेबीलोन की कैद में था।

तो ऐसा लगता है कि कालानुक्रमिक क्रम की तुलना में सामग्री का तार्किक क्रम अधिक है। अब, मुझे यकीन नहीं है कि मैं इस समय यहीं आपके लिए यह सब सुलझा सकता हूँ। लेकिन मुझे लगता है कि पूछे जाने वाले प्रश्नों में संभवतः यह एक कारक है। दूसरे शब्दों में, आप 2 किंग्स के अध्याय 18 में देखते हैं, वे पहले 16 छंद, आपको हिजकिय्याह के शासनकाल का सारांश देते हैं।

फिर तुम वापस जाओ, और जब तुम श्लोक 17 से शुरू करते हो, सन्हेरीब यरूशलेम को धमकी देता है; आपके पास उस विशिष्ट घटना का लेखा-जोखा है। वह चीजों के उस पूरे प्रवाह में कालानुक्रमिक रूप से भिन्न रूप से फिट हो सकता है। यह आवश्यक नहीं है, लेकिन जो कुछ भी घटित हुआ उसके बाद यह घटित होता है।

6. हिजकिय्याह के शासनकाल की प्रमुख तिथियाँ हिजकिय्याह के कालक्रम के बावजूद, यहाँ प्रमुख तिथियाँ हैं: 734, यहूदा के विरुद्ध सिरियो-एप्रैमी युद्ध; 732, दमिश्क पर अश्शूर का कब्ज़ा; 721, सामरिया गिरता है; और 701, सन्हेरीब ने हिजकिय्याह के यहूदा पर हमला किया। जब हम उससे आगे बढ़ते हैं, तो हम मनश्शे के समय में आते हैं। वह दक्षिणी साम्राज्य में महान धर्मत्याग का समय था। मनश्शे को यहूदा के राजाओं में सबसे खराब राजा के रूप में चित्रित किया गया था। मनश्शे के समय के दौरान यहूदा का निर्वासन निश्चित और अपरिहार्य हो गया और ऐसा लगता है कि यह वह समय है जब यशायाह ने अपने संदेश को ईश्वरीय अवशेष के लिए सांत्वना, सांत्वना और आशा के शब्दों में बदल दिया और उस फैसले से परे देखा जो निश्चित था। दूसरे शब्दों में, निर्वासन निश्चित है, लेकिन यह हमेशा के लिए नहीं है। इसका अंत होगा। कुछ अवशेष होंगे जो वापस आएँगे।

सी. यशायाह की पुस्तक की संरचना

यह - सामान्यतः - यशायाह की भविष्यवाणियों के लिए ऐतिहासिक सेटिंग है।

आइए सी पर चलते हैं, जो है, "पुस्तक की संरचना।" यशायाह की रूपरेखा तैयार करना एक कठिन पुस्तक है। मैं यहां उस प्रणाली का अनुसरण कर रहा हूँ जिसे मैंने पुस्तक के संगठन के कुछ सिद्धांतों को खोजने की कोशिश करने के लिए डॉ. एलन मैकरे से लिया था, ताकि इसे सामग्री के ब्लॉकों में तोड़ दिया जा सके जो पूरी किताब में पाई जा सकती हैं। पुस्तक में 66 अध्याय हैं, इसलिए बोर्ड पर पहली पंक्ति यशायाह की पुस्तक का प्रतिनिधित्व करती है। यदि आप इसे विभाजित करना शुरू करने जा रहे हैं, तो एक प्रमुख विभाजन बिंदु है और वह यह खंड है, अध्याय 36 से 39, क्योंकि 36 से 39 पुस्तक के बाकी हिस्सों से स्पष्ट रूप से भिन्न है। अध्याय 36 से 39

ऐतिहासिक आख्यान है। वास्तव में, यह हिजकिय्याह के समय के राजाओं की पुस्तक में ऐतिहासिक कथा और सन्हेरीब की इस धमकी के समानांतर है। यशायाह 36 से 39 और 17 और 18 के आसपास 2 राजाओं का वह खंड जिसे हम अभी देख रहे हैं; यह बहुत समान है। तो यह एक अलग खंड है जो स्वाभाविक रूप से पुस्तक को दो भागों में विभाजित करता है: 1 से 35 और 40 से 66। 1 से 35 और 40 से 66 दोनों ऐतिहासिक कथा से अलग भविष्यसूचक प्रवचन हैं।

अब, 1 से 35 तक की अधिकांश सामग्री आहाज के समय या उससे भी पहले दिए गए प्रवचनों से बनी है। उनमें से कुछ उज्जिय्याह के समय के हैं। तो 1 से 35 यशायाह के मंत्रालय के आरंभ में हैं, आप कह सकते हैं, या अपेक्षाकृत प्रारंभिक, इसमें से अधिकांश आहाज के समय के आसपास हैं। अध्याय 36 से 39 - यह भविष्यसूचक प्रवचन नहीं है बल्कि यह हिजकिय्याह के समय से संबंधित ऐतिहासिक कथा है। आप 36 से 39 में जो देखते हैं वह पुस्तक के पहले भाग में यशायाह की कुछ भविष्यवाणियों की पूर्ति है। विशेष रूप से वह भविष्यवाणी, कि भले ही असीरिया अंदर आएगा और भगवान के न्याय का एक साधन बनेगा, असीरिया पूरी भूमि पर पूरी तरह से कब्ज़ा नहीं करेगा, और ऐसा नहीं होता है। यशायाह ने कहा कि अशशूर हमला करेगा, लेकिन यहूदा पूरी तरह से हार से बच जाएगा, और ठीक वैसा ही हुआ। यह 36 से 39 के उस खंड में दर्ज है। आप देखें कि यह ऐतिहासिक रूप से कैसे काम करता है।

मैं वापस आऊंगा और 40 से 66 के बारे में बाद में कुछ कहूंगा। लेकिन आइए इस खंड 1 से 35 के साथ काम करें और इसे और अधिक स्पष्ट करने का प्रयास करें। मुझे लगता है कि यदि आप ऐसा करते हैं, तो आप पाएंगे कि सबसे प्राकृतिक विभाजन इस प्रकार हैं: अध्याय 1 से 6 अपने आप में एक प्रकार की इकाई बनाते हैं, फिर अध्याय 7 से 12, फिर अध्याय 13 से 23, फिर 24 से 27, फिर 28 से 35. वे विभाजन हैं। अब उनमें से प्रत्येक को क्या अलग करता है? आइए उन पर नजर डालें।

मैं कहूंगा कि सबसे स्पष्ट इकाइयाँ 13 से 23 और 24 से 27 हैं; इसीलिए मैंने उन्हें पंक्ति के ऊपर स्थापित किया है। अध्याय 13 से 23 विदेशी राष्ट्रों पर न्याय की भविष्यवाणियों का एक समूह है। तो उस खंड में यशायाह अपना संदेश केवल इस्राएल को नहीं, बल्कि आसपास के राष्ट्रों को

निर्देशित कर रहा है। यदि आप 13:1 को देखें, तो आप देख सकते हैं कि यह कैसे बहुत तेजी से काम करता है। “बाबुल के विषय में एक दैवज्ञ, जिसे आमोस के पुत्र यशायाह ने देखा।” यशायाह 15:1, “मोआब के विषय में एक भविष्यवाणी;” अध्याय 17, “दमिश्क के विषय में एक दैवज्ञ;” अध्याय 18, “कुश की नदियों के किनारे पंख फड़फड़ाने वाली भूमि पर धिक्कार है, जो पानी के ऊपर पपीरस नावों में समुद्र के द्वारा दूत भेजता है।” यह कुश के विरुद्ध एक भविष्यवाणी है। कुश संभवतः मिस्र के दक्षिण में इथियोपिया है। अध्याय 19, “मिस्र के विषय में एक दैवज्ञ।” तो आप यहां इस खंड में विदेशी राष्ट्रों के संबंध में भविष्यवाणियां देखते हैं, और यह उन्हें एक अद्वितीय खंड के रूप में अलग करता है।

जब आप अध्याय 24 से 27 तक पहुंचते हैं, तो उस खंड को अक्सर “यशायाह का छोटा सर्वनाश” कहा जाता है। आप 24 से 27 में जो देखते हैं वह भविष्यवाणियों का एक संग्रह है जो पृथ्वी के राष्ट्रों पर आने वाले महान न्याय की बात करता है। वे सभी जो परमेश्वर का विरोध करते हैं, इस न्याय को भुगतेंगे। इसका दायरा काफी वैश्विक प्रतीत होता है। तो वह खंड “यशायाह का छोटा सर्वनाश” है।

वे दो खंड स्वयं को 1 से 6, 7 से 12, और 28 से 35 से अलग करते हैं। जब आप 1 से 35 पर आते हैं, तो सबसे स्पष्ट खंड संभवतः 7 से 12 होता है। जब आप 13 से 23, 24 निकाल लेते हैं 27 तक, आपके पास 1 से 12 रह जाता है। लेकिन 1 से 12 में से 7 से 12 एक स्पष्ट इकाई है। अध्याय 7 से 12 सिरो-एफ्रैमिक युद्ध और उसके परिणाम से संबंधित है। अध्याय 7 में, प्रभु यशायाह से कहते हैं, अपने पुत्र शियर-याशूब को ले जाओ, बाहर जाओ और आहाज से मिलो और उसे अशशूर के साथ किए गए इस गठबंधन के बारे में बताओ। मुझ पर भरोसा करने के बजाय, वह अशशूर पर भरोसा कर रहा है। उसी के कारण फैसला सुनाया जाता है। तो 7 से 12 की एक विशिष्ट पृष्ठभूमि और ऐतिहासिक सेटिंग है: 734 ईसा पूर्व का सिरो-एफ्रैमिक युद्ध और जो इसे एक इकाई के रूप में अलग करता है। उस इकाई को अक्सर “द बुक ऑफ़ इमैनुएल” कहा जाता है। उस नाम का कारण यशायाह 7:14 की भविष्यवाणी है क्योंकि यशायाह 7:14 में, उस सिरो-एफ्रैमिक युद्ध के संदर्भ में, यशायाह कहता है, “प्रभु स्वयं तुम्हें एक संकेत देगा: कुंवारी गर्भवती होगी और एक बच्चे

को जन्म देगी बेटा, और उसका नाम इममानुएल रखा जाएगा।" इस बारे में कई दिलचस्प सवाल उठते हैं कि आप उस भविष्यवाणी की व्याख्या कैसे करते हैं, आप इसे उस संदर्भ से कैसे जोड़ते हैं और साथ ही इसे मसीहाई भविष्यवाणी के रूप में कैसे देखते हैं। हम उसमें शामिल होंगे। वह सुप्रसिद्ध पद, यशायाह 7:14, ने इस खंड को एक शीर्षक दिया है, अध्याय 7-12, क्योंकि यह उस खंड के केंद्र में है, "इमैनुएल की पुस्तक।"

यह शुरुआती अध्याय 1 से 6 को छोड़ देता है। और 1 से 6 प्रकृति में बहुत अधिक सामान्य है। सामान्य प्रकृति के बावजूद, आप इसे 7 से 12 की तरह, उस सिरो-एफ्रैमिक युद्ध के साथ, किसी विशिष्ट ऐतिहासिक सेटिंग तक सीमित नहीं कर सकते। लेकिन अध्याय 1-6 3 खंडों में विभाजित है, और हम इन तीन खंडों के चरित्र को देखने जा रहे हैं। तीन खंड हैं 1:1 से 2:5, 2:6 से 4:6, और 5:1 से 6:13। उन तीन खंडों का चरित्र यह है कि आपके पास निर्णय की घोषणा है जिसके बाद एक खंड है जो भविष्य के आशीर्वाद की बात करता है। (रूपरेखा में, वह अनुभाग जो भविष्य के आशीर्वाद की बात करता है, कोष्ठक में है।) आप 1:1 से 2:5 में देखते हैं, 2:1-4 भविष्य के आशीर्वाद की बात करता है। आपके पास निर्णय है फिर भविष्य का आशीर्वाद। फिर आप निर्णय के लिए 2:6 में वापस जाते हैं, लेकिन 4:2-6 में भविष्य के आशीर्वाद के एक और खंड के साथ इसका पालन किया जाता है। फिर आप 5:1 में फिर से निर्णय पर वापस जाते हैं, लेकिन इसके बाद 6:1 से 13 में आशीर्वाद मिलता है, उस मामले में बाद का आशीर्वाद यशायाह का आह्वान और वह दर्शन जो उसने देखा और प्रभु के वचन को लाने की अनुमति है इस्राएल के लोग। तो आप देखिए उस सामग्री का चरित्र है: निर्णय, आशीर्वाद; निर्णय, आशीर्वाद; निर्णय, आशीर्वाद। हम तीन खंडों को अधिक विस्तार से देखेंगे और देखेंगे कि यह कैसे काम करता है लेकिन इसकी संरचना इसी तरह की गई है।

इससे आपको 1 से 35 तक की सामग्री को व्यवस्थित करने का तरीका पता चलता है। आप वास्तव में इसे इन 5 खंडों में विभाजित करते हैं। भविष्यवाणियाँ संगठन के किसी प्रकार के सिद्धांत के इर्द-गिर्द समूहीकृत की जाती हैं, जैसे विदेशी राष्ट्रों के विरुद्ध भविष्यवाणियाँ; यह युगांतकारी सर्वनाशकारी निर्णय; सिरो-एफ्रैमिक युद्ध; निर्णय के गुण; और आशीर्वाद।

अध्याय 28 से 35 काफी हद तक 7 से 12 के समान है। और ऐसा लगता है कि इसमें अध्याय 28 से 35 के लिए वही सामान्य ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है जो सिरों-एफ्रैमिक युद्ध को अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के रूप में साझा करती है। लेकिन ऐसा लगता है कि अध्याय 7 से 12 राजा आहाज को अधिक संबोधित है, जो दाऊद के घराने का एक अयोग्य प्रतिनिधि है, जो यहूदा के सिंहासन पर बैठा है, अध्याय 28 से 35 देश के कुलीनों को अधिक संबोधित है, राजा से अलग नेतृत्व। लेकिन यह "इमैनुएल की पुस्तक" के समान है।

तो यह खंड अध्याय 1 से 35 है। हमने देखा कि 36 से 39 ऐतिहासिक कथा है, फिर आप अध्याय 40 से 66 तक पहुंचते हैं, जो पुस्तक के अंतिम 27 अध्याय हैं। और यहां दिलचस्प बात यह है कि यह सामग्री कुछ मायनों में काफी अलग है। बेशक, यह उस तरह की चीज़ है जिसका उपयोग आलोचनात्मक विद्वान यह सुझाव देने के लिए करते हैं कि हमारे यहाँ एक अलग लेखक है। सामग्री काफी अलग है। असीरिया, जो पुस्तक के पहले भाग में इतना प्रमुख है, अब शायद ही उल्लेख किया गया है। इस खंड में, भविष्यवक्ता अपना ध्यान मनश्शे और आहाज के समय में इज़राइल की दुखद स्थितियों से हटा देता है। और वह न केवल निर्वासन की आशा कर रहा है, बल्कि निर्वासन से मुक्ति की भी आशा कर रहा है, यह मानते हुए कि निर्वासन पहले ही हो चुका है। इसलिए यशायाह निर्वासन को बिल्कुल निश्चित मानता है, और पुस्तक के दूसरे भाग में उसका संबंध निर्वासन के आने से नहीं, बल्कि निर्वासन के अंत से है। उनका ध्यान इस बात पर है कि निर्वासन हमेशा के लिए नहीं रहने वाला है; मुक्ति होगी।

लेकिन इसका मतलब यह है कि, जबकि पुस्तक का पहला भाग, 1 से 35, आने वाले फैसले की चेतावनी और पश्चाताप के आह्वान से संबंधित है, पुस्तक के दूसरे भाग में काफी अलग जोर दिया गया है। पुस्तक के दूसरे भाग में आने वाले फैसले की उस चेतावनी पर बिल्कुल भी जोर नहीं दिया गया है। आपके पास आराम, सांत्वना, निर्वासन से परे भविष्य की आशा की सामग्री है। तो ऐसा लगता है कि यशायाह अब विश्वासियों से बात कर रहा है, उन्हें कुछ दे रहा है जो मूल्यवान होगा, और उनके वंशजों को प्रोत्साहन और आशा दे रहा है जो वास्तव में निर्वासन और न्याय की उन स्थितियों का अनुभव करते हैं।

अब, यह दिलचस्प है कि इस खंड में 13वां अध्याय, जो यशायाह 53 (40+13) है, जो यशायाह 40-66 के 27 अध्यायों का केंद्रीय अध्याय है। यह इस खंड के ठीक बीच में है कि आपके पास चरमोत्कर्ष है जिसकी ओर पिछली सभी चीज़ें आती हैं और जिस पर बाद की सभी चीज़ें आधारित होती हैं। 40 से 66 के ठीक मध्य में यशायाह 53 है। जो चित्रित करता है वह मसीह की पीड़ा है। "नौकर" की पीड़ा। यह नौकर परिच्छेदों के अनुक्रम के चरमोत्कर्ष में है। लेकिन यह उन लोगों के उद्धार के लिए मसीह की पीड़ा को खूबसूरती से स्पष्ट तरीके से दर्शाता है जो उस पर विश्वास करते हैं।

अब, यह एक प्रश्न उठाता है जो मुझे लगता है कि एक महत्वपूर्ण और दिलचस्प है, और वह प्रश्न है: वह मसीहाई विषय (नौकर की पीड़ा) कैसे है, यह यशायाह के इस खंड के पूरे फोकस से कैसे संबंधित है निर्वासन से मुक्ति पर? निर्वासन और इस नौकर विषय के बीच क्या संबंध है जो अपने लोगों की ओर से इस नौकर की मृत्यु में चरमोत्कर्ष पर पहुँचता है?

हमें अगली बार उस पर गौर करना होगा।

जेसिका बर्टन द्वारा लिखित,
 प्रारंभिक संपादन कार्ली गीमन द्वारा
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादन
 डॉ. पेरी फिलिप्स
 द्वारा अंतिम संपादन डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया